विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2568, पौष पूर्णिमा, 13 जनवरी, 2025, वर्ष 54, अंक 7

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

न वे कदरिया देवलोकं वजन्ति, बाला हवे नप्पसंसन्ति दानं।
धीरो च दानं अनुमोदमानो, तेनेव सो होति सुखी परत्थ॥

धम्मपदपाळि 177, लोकवग्गो

कृपण (लोग) देवलोक में नहीं जाते हैं, मूढ़ (लोग) ही दान की प्रशंसा नहीं करते हैं। पंडित (व्यक्ति) दान का अनुमोदन करता हुआ उसी (कर्म के आधार) से परलोक में सुखी होता है।

सयाजी ऊ बा खिन और विपश्यना पगोडा

– आचार्य सत्यनारायण गोयन्का

मानवजाति के इतिहास में कभी-कभार ही ऐसा कोई सत्पुरुष जन्म लेता है जो कि जनकल्याण के लिए ऐसा कोई महत्त्वपूर्ण काम कर जाता है जिससे कि उसका प्रभाव सदियों तक लोगों के जीवन पर कायम रहता है। सयाजी ऊ बा खिन ऐसे ही धर्मपुरुष थे, संतपुरुष थे। बर्मा ने जिस गुरु-शिष्य परंपरा से प्राप्त हुई विपश्यना विद्या को सदियों तक शुद्ध रूप में कायम रखा, वे उस परंपरा के जगमगाते सितारे थे। वैसे तो उनके हृदय में सारे विश्व के लिए अपार करुणा छलकती रहती थी परंतु भारत के प्रति उनका प्रेम अनुपम था, अनोखा था।

वे कहा करते थे कि मैं न जाने कितनी बार भारत में जन्मा हूं और न जाने कितने जन्मों में मैंने हिमालय की गिरि-गुहाओं में ध्यान किया है। इस सदी के छठे दशक में जब बिहार में लगातार दो वर्ष तक अकाल पड़ा तो वहां के दुर्भिक्ष-पीड़ित लोगों के प्रति उनके मानस में करुणा का सागर उमड़ पड़ा। रंगून के विपश्यना केंद्र के धर्मकक्ष के समीप एक कुशल शिल्पी द्वारा हिमालय की प्रतिकृति बनवायी और प्रतिदिन प्रात: चार बजे उठ कर ध्यान के पश्चात इस प्रतिकृति के पास खड़े होकर देर तक मंगल मैत्री दिया करते थे।

भारत के लोग दु:खमुक्त हों, भारत के लोग धर्मलाभी हों, भारत के लोगों का कल्याण हो। जिस देश में सिद्धार्थ गौतम ने सम्यक संबोधि प्राप्त की, जो कि केवल उसके लिए ही नहीं, बल्कि सारे विश्व के लिए परम कल्याण का कारण बनी, आज उसी देश के लोग कितने पीड़ित हैं, कितने दरिद्र हैं, कितने दु:खी हैं! वहां धर्म के नाम पर क्या हो रहा है! जाति-जाति का, वर्ग-वर्ग का, ऊंच-नीच का, मत-मतांतरों का, संप्रदाय-संप्रदायों का कितना हिंसात्मक विग्रह-विद्रोह चल रहा है, अन्तर्विरोध चल रहा है। द्वेष-दुर्भावनाओं का और अमानुषिक हत्याओं का कितना आतंक छाया हुआ है।

जिस पावन धरती पर विपश्यना के रूप में शुद्ध सद्धर्म की उत्पत्ति हुई और जो देश अनेक सदियों तक विश्व के दुखियारों को यह विद्या बांटता रहा, अरे! आज वही देश अब इस विद्या के लाभ से सर्वथा वंचित है। इस महान विद्या का लाभ लेना तो दूर रहा, वहां के लोगों का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि उन्होंने विपश्यना शब्द ही भुला दिया। उस महान देश को अपनी यह पुरातन अध्यात्म विद्या पुन: प्राप्त होगी तो सारे विग्रह-विद्रोह अपने आप समाप्त हो जायेंगे।

वे बार-बार कहते थे कि सदियों पहले बर्मा ने भारत से यह अनमोल रत्न प्राप्त किया था। अब समय आ गया है। मुझे यह ऋण चुकाना है, जिसे हमारे गुरुजनों ने इतने प्रयत्नपूर्वक संभाल कर रखा वह अनमोल धरोहर भारत को देनी है, भारत को लौटानी है। वे बार-बार करुणचित्त से यह कल्याणी भावना प्रकट किया करते थे और बहुत चाहते थे कि वे स्वयं भारत आकर यह ऋण चुकाएं। परंतु राजनीतिक परिस्थितियों के कारण वे भारत नहीं आ सके। लेकिन फिरभी बार-बार उनके मुँह से यह धर्मवाणी निकलती थी कि अब विपश्यना का डंका बज चुका है। यह शीघ्र ही भारत लौटेगी। उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास था कि अतीतकाल के किसी संत की यह भविष्यवाणी अवश्य सफलीभूत होगी, जिसमें यह कहा गया था कि तथागत के पच्चीस सौ वर्षों के बाद तक बर्मा में यह विद्या कायम रहेगी और यहां से पुन: भारत लौटेगी और वहां के अनेक पुण्यपारमी संपन्न समझदार लोगों द्वारा सहर्ष स्वीकारी जायेगी।

तब भारत से यह विद्या सारे विश्व में फैलेगी और बहुत बड़ा लोक-कल्याण करेगी। उनकी मजबूरी थी कि वे स्वयं नहीं आ सके। परंतु उन्हें अपना मंगल वचन पूरा करना था। वे भारतीय मूल के अपने धर्मपुत्र को जितना कर सकते थे, उतना निपुण किया। जितना पका सकते थे, उतना पकाया और उसे अपने प्रतिनिधि के रूप में भारत भेजा। यों लगभग दो हजार वर्ष के लंबे अंतराल के बाद इस महान देश में भगवती विपश्यना विद्या का पुनरागमन हुआ।

पिछले 29-30 वर्षों में जितना काम हुआ वह पर्याप्त नहीं ही है, परन्तु संतोष इसी बात का है कि आरंभ तो हुआ। और आरंभ भी अच्छा ही हुआ। हम आभारी हैं, बहुत आभारी हैं उस महान संत के, जिसकी निष्ठा और लगन के कारण भारत को अपनी यह खोयी हुई अनमोल संपदा प्राप्त हुई। हम उस संत के ऋण को कैसे भूल सकते हैं, उस ऋण को कैसे उतार सकते हैं?

उपाय केवल यही है कि एक तो हम स्वयं इस विद्या में पकें और दूसरे अधिक से अधिक लोग इस विद्या के संपर्क में आकर अपना कल्याण साध सकें, इस कार्य में हम उनकी सहायता करें। यही तो गुरुदेव का कल्याणकारी मंतव्य था। यही उनके जीवन का मांगलिक ध्येय था, यही उन्हें श्रेय था, यही उन्हें प्रेय था। अगला वर्ष उन संत पुरुष सयाजी ऊ बा खिन का जन्मशताब्दी

वर्ष है। मुंबई महानगरी में एक विशाल स्तूप के निर्माण का शिवसंकल्प लिया गया है। इस निमित्त एक प्रबल पुण्यशाली विपश्यी साधक के परिवार ने अत्यंत श्रद्धापूर्वक अति मूल्यवान जमीन का दान दिया, जहां यह धर्मस्तूप बनेगा और यह धर्मस्तूप विपश्यना के प्रचार-प्रसार का एक विशिष्ट प्रभावशाली माध्यम बनेगा।

भगवान बुद्ध के अंतिम आदेश के अनुसार इस स्तूप के विशाल धर्मकक्ष में उनके अस्थि-अवशेष स्थापित किये जायेंगे, जिसकी धर्मतरंगों का लाभ लेते हुए लगभग दस हजार विपश्यी साधक-साधिकाएं सामूहिक साधना में भाग ले सकेंगे। वहीं उनके लिए एक दिवसीय शिविर भी लगते रहेंगे। कभी-कभी किन्हीं जिज्ञासुओं द्वारा यह पूछा जाता है कि यह विशाल इमारत किसी पगोडा की प्रतिकृति के रूप में क्यों बनायी जाय? इसे किसी भारतीय मंदिर का रूप क्यों न दिया जाय? समझें ऐसा क्यों किया जा रहा है।

स्तूप की संरचना भीतर से वर्तुलाकार हो तो ध्यान की तरंग अधिक स्थायी और अधिक बलवान होती हैं और यह धर्मस्तूप तो विपश्यना ध्यान के लिए बनाया जा रहा है। इसका स्वरूप किसी मंदिर के रूप में नहीं हो सकता। इसमें कोई मूर्ति स्थापित नहीं होगी। न कोई षोडसोपचार पूजन होगा, न कोई भजन-कीर्तन होगा, न कोई पूजन-अर्चन होगा, न कोई धूप-दीप जलाए जायंगे, न कोई पत्र, पुष्प, नैवेद्य आदि चढ़ाए जायेंगे, न घंटे-घड़ियाल बजा कर किसी की आरती उतारी जायगी, न अन्य किसी प्रकार का सांप्रदायिक कर्मकांड किया जायगा।

धर्मस्तूप के भीतर केवल बड़ी संख्या में साधक ध्यान करेंगे और वह भी किसी मूर्ति का ध्यान नहीं करेंगे, किसी आकृति का ध्यान नहीं करेंगे। कोई नामजप नहीं करेंगे, कोई मंत्रजप नहीं करेंगे अन्यथा ये सब सांप्रदायिक हो जायेंगे। केवल विपश्यना ध्यान के लिए ही इस स्तूप का उपयोग होगा, जिसमें साधक अपने भीतर विकारों के कारण को और उन कारणों के निवारण के उपाय को बहुत सजगतापूर्वक जानते रहने का अभ्यास करेंगे।

विपश्यना का यह अभ्यास सांप्रदायिक नहीं है, किसी एक संप्रदाय से जुड़ा हुआ नहीं है। इसकी सार्वजनीनता स्वयं सिद्ध है। इसके लिए किसी संप्रदाय में दीक्षित होने की कतई आवश्यकता नहीं है। जैसे आसन और प्राणायाम शरीर की कसरत हैं वैसे ही विपश्यना मन की कसरत है। इसका अभ्यास किसी भी संप्रदाय का कोई भी व्यक्ति करे, उसे वही परिणाम मिलते हैं, वही फल प्राप्त होते हैं। स्वच्छ जीवन जीने की कला हाथ लग जाती है। जीवन सुख-शांति से भर उठता है। ऐसा प्रत्यक्ष हो रहा है। विभिन्न संप्रदायों के लोग भारी संख्या में शिविरों में सम्मिलित होकर लाभान्वित हो रहे हैं। विपश्यना स्तूप का निर्माण किसी संप्रदाय की स्थापना के लिए कदापि नहीं हो रहा है। इसके विपरीत लोगों को भिन्न-भिन्न सांप्रदायिक बंधनों से छुड़ा कर सर्वमान्य शील, सदाचार का जीवन जीने के लिए और चित्त को एकाग्र कर निर्मल करने की विद्या के लिए हो रहा है। इस धर्मस्तूप का उद्देश्य यही है कि जो विपश्यी हैं वे यहां आकर और अधिक विपश्यना में पकें। जो नहीं हैं वे विपश्यना में शामिल होने की प्रेरणा प्राप्त करें।

गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन बर्मा से भारत कोई संप्रदाय भेजने के लिए आतुर नहीं थे बल्कि सर्व लोक हितकारिणी विपश्यना भेजने के लिए आतुर थे। अरे, संप्रदाय तो यहां अनेकानेक हैं ही। जो हैं, उनके जो परिणाम आ रहे हैं वे हमारे सामने हैं। संप्रदाय शब्द का अर्थ होता है समता प्रदान करना। लेकिन ये जो संप्रदाय हैं, चाहे कोई भी संप्रदाय हो, वे समता प्रदान करने के बजाय समाज में विषमता प्रदान कर रहे हैं। ऐसी हालत में यदि एक और संप्रदाय वहां चला जाय तो उस देश का क्या भला होगा? गुरुदेव इस बात को खूब समझते थे। सार्वजनीन धर्म ही भारत का और विश्व का कल्याण करेगा। यही उन्हें अपेक्षित था और इसीलिए उनकी पावन स्मृति में उनके कल्याणकारी मंतव्य को पूरा करने के लिए विपश्यना धर्म-स्तूप का निर्माण होने वाला है।

फिर एक प्रश्न उठता है कि दस हजार साधकों के लिए एक वर्तुलाकार छत के नीचे, खम्भों की अड़वार के बिना एक विशाल धर्मकक्ष का निर्माण करना तो समझ में आता है पर इसके लिए इसके बाहरी ढांचे को यांगों के श्वेडगोन पगोडा की आकृति का बनाने का क्या अर्थ है? उसका क्या कारण है?

इसको भी समझना चाहिए। धर्म की शुद्धता समझ में आने लगेगी तो यह भी समझ में आने लगेगा कि कृतज्ञता धर्म का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जिस म्यंमा देश ने हमारे देश की इस अनमोल निधि को लगभग दो हजार वर्षों तक इतनी सजगता के साथ शुद्ध रूप में कायम रखा और अब हमारे भले के लिए इसे लौटाया है, उसका उपकार मानते हुए उसके प्रति कृतज्ञता का भाव जगना नितांत आवश्यक है। यही धर्मानुकूल है।

भूतकाल में जब यह विद्या पड़ोसी देशों में गयी तो वहां के लोगों ने जो स्तूप बनाए वे यहां भारत के उन दिनों के स्तूपों की प्रतिकृति के रूप में बने। उसका एक प्रमुख कारण यही था कि उन देशों में बने हुए इन स्तूपों को देख कर उन-उन देशों के लोगों के मन में सदियों तक भारत के प्रति कृतज्ञता का भाव जागता रहे। वह अब भी जागता है। ठीक इसी प्रकार बर्मा से जब यह विद्या हमें मिली है तो बर्मा के प्रसिद्ध स्तूप के अनुरूप बने हुए इस स्तूप को देख कर यहां के लोग बर्मा के प्रति कृतज्ञता का भाव जगाएं और यह कृतज्ञता सदियों तक जागती रहे। इसी अभिप्राय से इस आकृति को स्वीकार किया गया। भव्य स्थापत्यकला से परिमंडित यह गगनचुंबी विशाल स्तूप भारत की पुरातन अध्यात्म विद्या का सिर ऊंचा करते हुए भारत के तथा विश्व के अनेक लोगों को आकर्षित करेगा, आमंत्रित करेगा और जो इस पवित्र भूमि पर आयेंगे, उनमें से अनेक विपश्यना से जुड़ कर अपना कल्याण साध लेंगे। धर्मस्तूप के निर्माण का यह भी एक प्रमुख पावन उद्देश्य है। अधिक से अधिक लोग विपश्यना से लाभान्वित हों! भारत के नहीं, सारे विश्व के सभी हिंसात्मक झगड़े-फसाद दूर हो जायँ! एक बार फिर विपश्यना की पावन धर्मगंगा प्रवहमान हो उठे और इसके प्रभाव से विपुल विश्व-कल्याण हो! इस धर्मभावना से उत्प्रेरित उस महान गृही संत सयाजी ऊ बा खिन के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता प्रकट करने का यह एक मंगल प्रयास है।

कृतज्ञता सचमुच उत्तम मंगल है। इस ऐतिहासिक महान धर्मयज्ञ में अपनी ओर से आहुति डालते हुए पुरातन भारत की दान देने की शुद्ध दान-चेतना भी समझ लेनी चाहिए। प्राचीन भारत में शुद्ध धर्म के क्षेत्र में दान की परंपरा अत्यंत पवित्र होती थी, सात्विक होती थी। उसी पवित्रता की हमें स्थापना करनी है जिससे देश की गौरव-गरिमा बढ़े और लोक कल्याण भी हो।

पुरातन परंपरा के अनुसार जब एक भिक्षु नगर में गोचरी के लिए निकलता था तो हाथ में भिक्षा का पात्र लिए हुए नजर नीची किये हुए, मौन रह कर क्रमश: एक-एक घर के सामने लगभग एक-एक मिनट रुकता हुआ चारिका करता था। न वह 'भिक्षाम् देहि' की आवाज लगाता था और न ही माई भूखा हूं, बाबा रोटी दो, माई रोटी दो की रट लगाता था। पुरातन भारत में कोई भिक्षु भिक्षुक नहीं होता था। भिक्षु और भिक्षुक में बहुत बड़ा अंतर है। जो व्यक्ति विपश्यना साधना द्वारा भव-संसरण के दु:खों का भेदन करता है वही भिक्षु कहलाता है- भिन्दति दुक्खं'ति भिक्खु! वह भीख मांगने के लिए चारिका नहीं करता था, बल्कि धर्म की

शुद्ध परंपरा के अनुसार गृहस्थ को पुण्यजनक अवसर प्रदान करने के लिए हर घर के सामने रुकता था। मिनट भर में घर के बाहर कोई न निकले तो प्रसन्न चित्त से उनकी मंगल कामना करते हुए आगे बढ़ जाता था। कोई बाहर आकर उसके पात्र में भोजन डाले तो उसकी भी उसी प्रकार से मंगल कामना करते हुए आगे बढ़ जाता था।

और अक्सर होता यह था कि भिक्षुओं की चारिका के समय गृहस्थ स्वयं अपने-अपने घर के सामने उत्सुकतापूर्वक उनकी प्रतीक्षा किया करते थे। जैसा कि पड़ोसी देशों में आज भी हो रहा है। धर्मवान गृहस्थ भोजन प्रदान कर सकने का अवसर दिये जाने के कारण भिक्षु का आभार मानते हैं। इस पावन प्रथा के कारण न भिक्षु के मन में भिखारी की-सी हीन भावना जागती है और न ही गृहस्थ के मन में कोई अहंकार जागता है। दान देना और दान लेना, दोनों निष्कलंक रहते हैं। धर्म से परिपूर्ण रहते हैं। सद्धर्म से संबंधित सारे दान इसी शुद्धता से दिये जाने चाहिए। पहले तो मन में यह चेतना जागनी चाहिए कि जिस योजना के लिए मैं दान दे रहा हूं, उसके पूर्ण होने पर आज की ही नहीं, बल्कि सदियों तक भावी पीढ़ियों के हजारों लाखों लोग फिर विपश्यना की ओर आकर्षित होंगे और इस प्रकार सारे दान की जड़ें सदियों तक बलदायी और फलदायी बनी रहेंगी। कितना बड़ा सौभाग्य है कि दीर्घकाल तक फलदायी पुण्य का अर्जन करने का मुझे ऐसा अनोखा अवसर प्राप्त हो रहा है। हर एक दानी के मन में इस प्रकार की भावना जागनी आवश्यक है। और जो विपश्यी दान दिया चाहते हैं उनके मन में एक और शुभ चेतना जागनी चाहिए और वह यह कि हमारे दादागुरु यह कल्याणकारी विद्या भारत को न देते तो मेरा कल्याण कैसे होता! अतः इस बृहद् आयोजन में अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार जो थोड़ा या बहुत सहयोग दे रहा हूं वह उस महान संत सयाजी ऊ बा खिन के प्रति अपनी कृतज्ञता स्थापित करने का यत्किंचित प्रयास मात्र है।

भारत में तथा विश्व में कल्याणी विपश्यना द्वारा लोककल्याण का पुण्यकार्य लंबे अरसे तक गतिमान रहे और सर्वलोककल्याण की उनकी धर्म कामना पूर्ण हो, इस धर्मचेतना से दिया हुआ कोई भी सहयोग थोड़ा हो या अधिक, सचमुच बहुत पुण्यफलदायी ही होगा। भारत अपनी पुरातन गौरव गरिमा के साथ पुनः जागे। विपश्यना विद्या की यह अनमोल शिरोमणि अपने सिर पर धारण करके विश्व के जन-जन की शांति के लिए अहिंसा का यह प्रयोगात्मक प्रशिक्षण सारे संसार में बँटे! इसके प्रभाव से सारे विश्व का मंगल हो! सारे विश्व का कल्याण हो! सारे विश्व में विपश्यना विद्या फैले! दुखियारों के दुःख दूर हों! सब को शांति मिले, सुख मिले! सबका कल्याण हो! मंगल हो! सबकी स्वस्ति-मुक्ति हो! स्वस्ति-मुक्ति हो!

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध से लेकर सयाजी ऊ बा खिनजी तक सभी धर्माचार्यों के प्रति हमारी कृतज्ञता असीम है। यदि उनके द्वारा धर्म का संप्रेषण न किया गया होता और वे सदियों तक इसे नितांत शुद्ध रूप में सुरक्षित न रखते, तो हम इस जीवन में धर्म के इस अनमोल रत्न को कैसे प्राप्त करते?

हम अपनी गहरी निष्ठा और असीम कृतज्ञता को जतलाने के लिए उनकी स्मृति में अपना मस्तक नवाते हैं।

– स० ना० गोयन्का

(विपश्यना पगोडा स्मारिका 1999 से साभार उद्धृत)

पूज्य माताजी से साक्षात्कार

श्रीमती इलायची देवी गोयन्का, जो कि अपने परिवार में और साधकों में, 'माताजी' के नाम से जानी जाती हैं। (आदरणीया माँ : भारतीय महिलाओं के लिए सम्मानजनक संबोधन) इनका जन्म बर्मा की पुरानी राजधानी 'मांडले', में जनवरी, 1930 को हुआ था। इनके पूर्वज राजस्थान, (भारत) से लगभग सौ वर्ष पहले बर्मा चले गये थे। वे अनाज और दूसरी चीजों का व्यवसाय करते थे। वे तीन बच्चों; दो पुत्रियां और एक पुत्र में से एक हैं।

माताजी ने अपने बचपन के प्रारंभिक बारह साल गोयन्का परिवार के समीप ही मांडले में रहीं। जैसा कि उन दिनों का रिवाज था, छोटी उम्र में शादी कर दी जाती थी, सो उनकी भी सगाई गोयन्काजी से हो गई।

गोयन्काजी और माताजी की शादी मांडले में 1942 में हुई। शादी के कुछ समय बाद ही जापानियों ने मांडले शहर पर बड़ी हवाई बम्बारी शुरू कर दी। लोग बरमा छोड़कर भागने लगे। उस समय गोयन्काजी और माताजी के परिवार को लोग भी भारत आ गये, जहां वे युद्धकाल तक रहे। माताजी का परिवार उत्तरी-पश्चिमी भारत में रहने लगा जहां उनके पिताजी ने पंजाब व गुजरात में जीविकोपार्जन का काम शुरू किया। गोयन्काजी का परिवार कुछ समय तक चुरू, राजस्थान में रहने के बाद दक्षिणी भारत में रहने लगा। माताजी भी अपने पति के साथ रहने लगीं।

युद्ध के बाद, गोयन्काजी और माताजी पुनः बर्मा लौटे और रंगून में बस गये, जहां वे पूर्ण रूप से गृहस्थ बनकर छः पुत्रों सहित एक बड़े संयुक्त परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदारी के साथ-साथ सफल व्यापारी और भारतीय समाज का नेतृत्व करने वाले बन गये।

गोयन्का जी ने 1955 में, सयाजी ऊ बा खिन के साथ पहला शिविर किया। माताजी और परिवार के अन्य सदस्यों और मित्रों ने भी शिविर किये और सयाजी के मार्ग दर्शन में अभ्यास करने लगे। सन 1969 में गोयन्का जी भारत आये और विपश्यना शिविर लेने शुरू किये। माताजी सयाजी की मृत्यु के पश्चात 1971 में भारत आयीं और फिर धीरे-धीरे सारा परिवार मुंबई में बस गया।

गोयन्काजी और माताजी के छः पुत्र, छः बहुएं और ग्यारह पोते-पोतियां एवं अन्य सगे संबंधियों सहित मुंबई में, परंपरागत संयुक्त परिवार में एक साथ रहते थे, बाद में कुछ बच्चे अलग रहने लगे।

नीचे दिया गया साक्षात्कार, अक्टूबर, 1991 में एक अनुवादक के माध्यम से लिया गया था और अंग्रेजी के विपश्यना जनरल में छपा।

(पूज्य माताजी की 9वीं पुण्य-तिथि पर श्रद्धांजलि स्वरूप उनसे लिये गये साक्षात्कार का प्रारंभिक भाग यहां दिये हैं। शेष अगले अंक में)

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री विजय मुखेडकर, पुणे
2. श्रीमती नीलम ओसवाल, पुणे

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्रीमती सुजाता खन्ना, धम्म विपुल विपश्यना केंद्र, बेलापुर के केन्द्र आचार्य की सहायता
2. श्री प्रवीन कटपटल, धम्म विपुल विपश्यना केंद्र, बेलापुर के केन्द्र आचार्य की सहायता
3. डॉ. संग्राम जोंधळे, (केंद्र आ., धम्म देश हिंगोली), मराठवाडा क्षेत्र के समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य की सहायता

नव नियुक्तियां सहायक आचार्य

1. श्री नितिन मसरानी, मुंबई
2. श्री अमोल मिठारी, कोल्हापुर

3-4. श्री प्रशांत एवं श्रीमती शिल्पा देवरे, धुले

5. श्रीमती माधवी संघवी, राजकोट

6-7. श्री मनोज एवं श्रीमती छाया गांधी, सूरत

8. श्रीमती जी जानसी रानी, बेंगलुरु
9. श्रीमती स्वाथी गाढे, हैदराबाद
10. श्री मेघराज पोखरेल, नेपाल
11. श्री कमल प्रसाद उप्रेती, नेपाल
12. श्रीमती हरिप्रिया आर्यल, नेपाल
13. कु. रामेश्वरी महर्जन, नेपाल
14. Mr. Seng Vutea, Cambodia
15. Mrs. Supreeya Pongsakul, Thailand
16. Miss.Vilaiporn Chaiphanittrakul, Thailand
17. Mrs. Kitima Silabutr, Thailand
18. Mr. Suchin Thongnoppakun, Thailand

मंगल मृत्यु

1. अकोला जिले के धम्म मञ्जूसा वि. केंद्र के केंद्र-आचार्य श्री नंदूजी वि. तायडे 10 दिसंबर 2024 को शांतिपूर्वक दिवंगत हुए। अंत समय तक वे अत्यंत सजग व साधनारत रहे। 2001 से अनेक शिविरों के संचालन, व्यवस्था एवं केंद्रों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। वे निब्बानलाभी हों, उनकी स्वस्ति मुक्ति हो!
2. उल्हासनगर (ठाणे) के वरिष्ठ सहायक आचार्य 74 वर्षीय श्री अशोक सिंगापुरे 15 दिसंबर 2024, को शांतिपूर्वक दिवंगत हुए। वे 2017 से लगातार अपनी सेवाएं बिहार और महाराष्ट्र के केंद्रों पर देते हुए अनेकों के कल्याण में सहायक हुए। धर्मपथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए वे निब्बानलाभी हों, उनकी स्वस्ति मुक्ति हो।
3. बट्टमबंग, कंबोडिया के धम्म लट्ठिका केंद्र के केंद्र-आचार्य श्री फ्रैंकोइस कुओच 19 दिसंबर 2024 को अल्पकालिक बीमारी से दिवंगत हुए। उन्होंने कई वर्षों तक शिविरों का संचालन किया, स. आचार्यों को ट्रेनिंग दी और धम्म-प्रशिक्षण सामग्री का खमीर भाषा में अनुवाद एवं रेकार्डिंग का काम किया। वे निब्बानलाभी हों, उनकी स्वस्ति-मुक्ति हो!

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर:

1. **रविवार,** 19 जनवरी 2025 को सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि (19-1-1971) एवं माताजी की पुण्य-तिथि (5 जनवरी 2016) के उपलक्ष्य में
2. **रविवार,** 11 मई, 2025 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में।
3. **रविवार,** 13 जुलाई, आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।
4. **रविवार,** 05 अक्टूबर को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं— *समग्गानं तपोसुखो*। **सब के लिए संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email:** oneday@globalpagoda.org

3. 'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or Email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

जन-जन के कल्याण हित, स्तूप स्थापना होय।
जागे विश्व विपश्यना, जन-मन मंगल होय॥
पत्थर-पत्थर जोड़ कर, लिया चैत्य चिनवाय।
जिसके नीचे बैठ कर, ध्यान करे सुख पाय॥
इस मंगलमय स्तूप से, धर्म प्रकाशित होय।
जन-जन का हित-सुख सधे, भला विश्व का होय॥
धन्य! ध्यान की गिरि गुहा, धन्य! ध्यान का स्तूप।
यहां शांति सब को मिले, भिक्षु होय या भूप॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धन्य! दियो गुरुदेवजू, विपस्सना रो दान।
हिवड़ो तो हरखित हुयो, पुलकित होग्या प्राण॥
धन्यभाग गुरुदेवजू, पकड़ी मेरी बांह।
मुक्ति प्रदायक पथ दियो, धरम स्तूप री छांह॥
गुरुवर री करुणा जगी, हुयो किसो कल्याण।
प्यासै नै इमरत मिल्यो, मिल्यो धरम वरदान॥
सतगुरु तो किरपा करी, दियो धरम रो नीर।
धोयां सरसी आप ही, अपणो मैलो चीर॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2568, पौष पूर्णिमा, 13 जनवरी, 2025

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 30 DECEMBER, 2024, DATE OF PUBLICATION: 13 JANUARY, 2025

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org